चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम ...दैनिक जागरण...

दिनांक ..21..8..2019.. पृष्ठ सं. ...4... कॉलम ...3-5...

रिसर्च हकृवि ने किसानों की आय बढ़ाने की कड़ी में विकसित की ज्वार की किस्म

ज्वार की नई किस्म एचसी 713 दक्षिण भारत में दूर करेगी चारे की कमी

जागरण संवाददाता, हिसार : देश में चारे की कमी दूर करने और गुणवत्ता बढ़ाने के लिए चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय ने ज्वार की उन्नत किस्म एचसी 713 विकसित की है। इस किस्म को देश के दक्षिणी राज्यों में खेती के लिए चिह्नित किया गया है। हकृवि के जैनेटिक्स एंड प्लांट ब्रीडिंग विभाग के चारा अनुभाग द्वारा विकसित की गई यह किस्म दक्षिण भारत मुख्यतः कर्नाटक, महाराष्ट्र और तमिलनाडु के लिए उपयुक्त है। इस किस्म में हरे चारे की औसत पैदावार 407 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है, जोकि ज्वार की अन्य बेहतर किस्मों सीएसवी 21 एफ और सीएसवी 30 एफ से क्रमशः 7.5 फीसद व 5.8 फीसद अधिक है। इस किस्म की सूखे चारे की औसत पैदावार 115 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है जोकि पूर्व में विकसित उन्नत किस्मों से अधिक है।

अनुसंधान निदेशक डा. एसके सहरावत ने बताया कि भारत के मुख्य ज्वार उत्पादक राज्य जैसे कि महाराष्ट्र, कर्नाटक एवं तमिलनाडु में क्रमशः करीब 28 लाख, 11 लाख और 3.5 लाख हैक्टेयर क्षेत्र में ज्वार की खेती की जाती है। इस किस्म की पहचान आइसीएआर के भारतीय कदन्न अनुसंधान संस्थान हैदराबाद व चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित ज्वार की 49वीं वार्षिक समूह बैठक में की गई। एचसी 713 किस्म को चारा अनुभाग के वैज्ञानिक डा. पम्मी कुमारी, डा. सत्यवान आर्य, डा. एसके पाहुजा, डा. एनके ठकराल एवं डा. डीएस फोगाट की टीम ने डा. सतपाल, डा. जयंती टोकस, डा. हरीश कुमार, डा. विनोद मलिक एवं डा. सरिता देवी के सहयोग से विकसित किया है।

मिठास भी 10 फीसद अधिक

एचसी 713 में अधिक प्रोटीन व पाचनशीलता के कारण दुग्ध उत्पादन में वृद्धि से पशुपालकों को अधिक आर्थिक लाभ भी प्राप्त होगा। इस किस्म की एक विशेषता यह भी है कि इसमें मिठास 10 फीसद से भी अधिक है जिसके कारण पशु इसको अधिक पसंद करते हैं। यह लवणीय भूमि में भी उगाने के लिए उपयुक्त है। इसके अलावा यह लोजिंग के प्रति प्रतिरोधी है, अधिक बारिश व तेज हवा चलने पर भी यह किस्म गिरती नहीं है।

विषैला तत्व धूरिन बहुत कम, तना छेदक कीट की प्रतिरोधी

ज्वार में प्राकृतिक तौर पर पाया जाने वाला विषैला तत्व धूरिन इस किस्म में बहुत ही कम है। इसके अलावा इसमें प्रोटीन 7.5 फीसद व पाचनशीलता 52.2 फीसद है जिससे दुधारू पशुओं की उत्पादकता बढ़ेगी। एचसी 713 किस्म तना छेदक कीट के प्रति प्रतिरोधी है। इस किस्म में पत्तों पर लगने वाले रोग भी नहीं लगते। चारा उत्पादन, पौष्टिकता एवं रोग प्रतिरोधकता की दृष्टि से यह एक उत्तम किस्म है।

किसानों की आय दोगुनी होगी। इससे चारा बढ़ेगा। पशुओं के साथ किसानों को फायदा होगा। यह काफी बेहतर किस्म विकसित की गई है।

प्रो. केपी सिंह, कुलपति, हकृवि

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम ..... अमर उजाला .....
दिनांक 21.8.2019 पृष्ठ सं. .....6..... कॉलम .....3-6.....

एचएयू ने विकसित की ज्वार की उन्नत किस्म

देश के दक्षिणी भाग में खेती के लिए किया चिह्नित, पुरानी किस्मों के मुकाबले ज्यादा पैदावार

माई सिटी रिपोर्टर

हिसार। हरियाणा एग्रीकल्चर यूनिवर्सिटी (एचएयू) ने ज्वार की एक नई किस्म विकसित की है। यूनिवर्सिटी के जेनेटिक्स एंड प्लांट ब्रीडिंग विभाग के चारा अनुभाग द्वारा ज्वार की नई किस्म एचसी 713 को देश के दक्षिणी भाग में खेती के लिए चिह्नित किया गया है।

ज्वार की यह किस्म दक्षिणी राज्यों मुख्यतः कर्नाटक, महाराष्ट्र और तमिलनाडु में चारे की अधिक व गुणवत्तापूर्ण चारे के लिए उपयुक्त है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. केपी सिंह ने बताया कि एचसी 713 की हरे चारे की पैदावार अति लोकप्रिय किस्म सीएसवी 21 एफ से 7.5 प्रतिशत व सीएसवी 30 एफ से 5.8 प्रतिशत अधिक होने के कारण किसानों को अधिक मुनाफा होगा।

इस किस्म की एक विशेषता यह भी है कि इसमें मिठास 10 प्रतिशत से भी अधिक है, जिससे पशु इसे अधिक पसंद करते हैं। यह एक मीठी व स्वादिष्ट किस्म है, जो सिफारिश किए गए खाद व सिंचाई प्रबंधन में अधिक पैदावार देने में सक्षम होने के साथ लवणीय भूमि में भी उगाने के लिए उपयुक्त है। इसके अलावा यह लोजिंग के प्रति प्रतिरोधी है, अधिक बारिश व तेज हवा चलने पर भी यह किस्म गिरती नहीं है। ज्वार में प्राकृतिक तौर पर पाया जाने वाला विषैला तत्व घूरिन इस किस्म में बहुत ही कम है (80 पीपीएम ताजा भार आधार पर)। इसके अलावा इसमें प्रोटीन 7.5 प्रतिशत व पाचनशीलता 52.2 प्रतिशत है, जिससे दुधारू पशुओं की उत्पादकता बढ़ेगी। एचसी 713 किस्म तना छेदक कीट के प्रति प्रतिरोधी है व इस किस्म में पत्तों पर लगने वाले रोग भी नहीं लगते। चारा उत्पादन, पौष्टिकता एवं रोग प्रतिरोधकता की दृष्टि से यह एक उत्तम किस्म है।

ज्वार की नई उन्नत किस्म। - अमर उजाला

हरे चारे की औसत पैदावार 407 क्विंटल

अनुसंधान निदेशक डॉ. एसके सहरावत ने बताया कि भारत के मुख्य ज्वार उत्पादक राज्य जैसे कि महाराष्ट्र, कर्नाटक एवं तमिलनाडु में क्रमशः करीब 28 लाख, 11 लाख व 3.5 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में ज्वार की खेती की जाती है। इस किस्म की पहचान आईसीएआर के भारतीय कंदन अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद व हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित ज्वार की 49वीं वार्षिक समूह बैठक की गई। इस किस्म की हरे चारे की औसत पैदावार 407 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है, जोकि ज्वार की अन्य बेहतर किस्मों सीएसवी 21 एफ और सीएसवी 30 एफ से क्रमशः 7.5 प्रतिशत व 5.8 प्रतिशत अधिक है। इस किस्म की सूखे चारे की औसत पैदावार 115 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है, जोकि पूर्व में विकसित उन्नत किस्मों से अधिक है।

टीम में यह रहे शामिल

एचसी 713 किस्म को चारा अनुभाग के वैज्ञानिक डॉ. पम्मी कुमारी, डॉ. सत्यवान आर्य, डॉ. एसके पाहुजा, डॉ. एनके ठकराल एवं डॉ. डीएस फोगाट की टीम ने डॉ. सतपाल, डॉ. जयंती टोकस, डॉ. हरीश कुमार, डॉ. विनोद मलिक एवं डॉ. सरिता देवी के सहयोग से विकसित किया है। चारा अनुभाग 1970 से अब तक ज्वार की कुल आठ किस्में विकसित कर चुका है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम दैनिक भास्कर

दिनांक 21.8.2017 पृष्ठ सं. 6 कॉलम 1-6

सफलता • देश के दक्षिणी भाग में पशुओं की सेहत में करेगी इजाफा, मिठास की वजह से ज्वार पसंद करते हैं पशु

एचएयू ने हरे चारे के लिए तैयार की ज्वार की नई किस्म

भास्कर न्यूज | हिसार

लोगों के स्वास्थ्य के साथ-साथ पशुओं की सेहत में भी सुधार जरूरी है। क्योंकि पशुओं से मिलने वाले प्रोडक्ट भी लोगों तक पहुंचते हैं। ऐसे में पिछले लंबे समय से ज्वार में ऐसी किस्म की डिमांड थी जो अच्छी पैदावार के साथ गुणवत्ता भी दे सके। इसके लिए एचएयू के जेनेटिक्स एंड प्लांट ब्रीडिंग विभाग ने ज्वार की नई किस्म एचसी 713 विकसित की है। विभाग का चारा अनुभाग इस पर पिछले कई दिनों से रिसर्च कर रहा था। यह किस्म देश के दक्षिणी भाग में खेती के लिए प्रयोग की जाएगी। इसमें यह किस्म दक्षिणी राज्यों मुख्यतः कर्नाटक, महाराष्ट्र और तमिलनाडु में चारे के लिए अधिक उपयुक्त है।

इस नई किस्म से यह होगा फायदा

इस किस्म में मिठास 10 प्रतिशत से भी अधिक है, जिसके कारण पशु इसको अधिक पसंद करते हैं। कुलपति प्रो. केपी सिंह बताते हैं कि एचसी 713 से पहले अति लोकप्रिय किस्म सीएसवी 21 एफ व सीएवी 30 भी है, मगर नई किस्म इन दोनों किस्मों से क्रमशः 7.5 और 5.8 प्रतिशत अधिक चारा पैदा करेगी। जिससे किसानों को अधिक मुनाफा होगा तथा पशुपालक किसानों को अधिक प्रोटीन व पाचनशीलता के कारण दुग्ध उत्पादन में वृद्धि से अधिक आर्थिक लाभ भी प्राप्त होगा। प्रो. सिंह ने कहा कि यह एक

मीठी व स्वादिष्ट किस्म है जोकि सिफारिश किए गए खाद व सिचाई प्रबंधन में अधिक पैदावार देने में सक्षम होने के साथ-साथ लवणीय भूमि में भी उगाने के लिए उपयुक्त है। इसके अलावा यह लोजिंग के प्रति प्रतिरोधी है, अधिक बारिश व तेज हवा चलने पर भी यह किस्म गिरती नहीं है।

407 कुंतल प्रति हेक्टेयर है पैदावार

इस किस्म की हरे चारे की औसत पैदावार 407 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है। जो ज्वार की अन्य बेहतर किस्मों सीएसवी 21 एफ और सीएसवी 30 एफ से क्रमशः 7.5 प्रतिशत व 5.8 प्रतिशत अधिक है। इस किस्म की सूखे चारे की औसत पैदावार 115 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है जोकि पूर्व में विकसित उन्नत किस्मों से अधिक है। एचसी 713 किस्म को चारा अनुभाग के वैज्ञानिक डॉ. पम्मी कुमारी, डॉ. सत्यवान आर्य, डॉ. एसके पाहुजा, डॉ. एनके ठकराल एवं डॉ. डीएस फोगाट की टीम ने डॉ. सतपाल, डॉ. जयंती टोकस, डॉ. हरीश कुमार, डॉ. विनोद मलिक एवं डॉ. सरिता देवी के सहयोग से विकसित किया है। अनुसंधान निदेशक डॉ. एसके सहरावत ने बताया कि भारत के मुख्य ज्वार उत्पादक राज्यों में महाराष्ट्र, कर्नाटक एवं तमिलनाडु में क्रमशः करीब 28 लाख, 11 लाख व 3.5 लाख हैक्टेयर क्षेत्र में ज्वार की खेती की जाती है। इस किस्म की पहचान आईसीएआर के भारतीय कन्दन अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद व एचएयू द्वारा आयोजित ज्वार की 49वीं वार्षिक समूह बैठक में की गई।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम ....हरि. भूमि........

दिनांक 21.8.2019 पृष्ठ सं. ...14... कॉलम ...3-8...

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय ने ज्वार की नई किस्म एचसी 713 विकसित

मीठी व स्वादिष्ट है ज्वार की एचसी-713 किस्म : वीसी

- एचसी 713 किस्म तनाछेदक कीट के प्रति प्रतिरोधी है व इस किस्म में पत्तों पर लगने वाले रोग भी नहीं लगते

हरिभूमि न्यूज ▶▶हिसार

हकृवि के जैनेटिक्स एंड प्लांट ब्रीडिंग विभाग के चारा अनुभाग द्वारा ज्वार की उन्नत किस्म एचसी 713 को चिन्हित किया है। यह किस्म दक्षिणी राज्यों मुख्यतः कर्नाटक, महाराष्ट्र और तमिलनाडु में चारे की अधिक व गुणवत्तापूर्ण चारे के लिए उपयुक्त है।

कुलपति प्रो. केपी सिंह ने बताया कि एचसी 713 की हरे चारे की पैदावार सीएसवी 21 एफ से 7.5 प्रतिशत व सीएसवी 30 एफ से 5.8 प्रतिशत अधिक है। पशुपालक किसानों को अधिक प्रोटीन व पाचनशीलता के कारण दुग्ध उत्पादन में वृद्धि से अधिक आर्थिक लाभ भी प्राप्त होगा। इस किस्म की एक विशेषता यह भी है कि इसमें मिठास 10 प्रतिशत से भी अधिक है जिसके कारण पशु इसको अधिक पसंद करते है।

प्रो. सिंह ने कहा कि यह एक मीठी व स्वादिष्ट किस्म है जोकि अनुशंसा किए गए खाद व सिंचाई प्रबंधन में अधिक पैदावार देने में सक्षम होने के साथ-साथ लवणीय भूमि में भी उगाने के लिए उपयुक्त है। इसके अलावा यह लोजिंग के प्रति प्रतिरोधी है, अधिक बारिश व तेज हवा चलने पर भी यह किस्म गिरती नहीं है।

एचसी 713 को नहीं होगा पत्ता रोग

ज्वार में प्राकृतिक तौर पर पाया जाने वाला विषैला तत्व धूरिन बहुत कम 80 पीपीएम ताजा भार आधार पर है। इसके अलावा इसमें प्रोटीन 7.5 प्रतिशत व पाचनशीलता 52.2 प्रतिशत है। एचसी 713 किस्म तनाछेदक कीट के प्रति प्रतिरोधी है व इस किस्म में पत्तों पर लगने वाले रोग भी नहीं लगते।

407 क्विंटल प्रति हैक्टेयर पैदावार

अनुसंधान निदेशक डॉ. एसके सहरावत ने बताया कि महाराष्ट्र, कर्नाटक एवं तमिलनाडु में क्रमशः करीब 28 लाख, 11 लाख व 3.5 लाख हैक्टेयर क्षेत्र में ज्वार की खेती की जाती है। एचसी 713 की पहचान आईसीएआर के भारतीय कन्दन अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद व हकृवि द्वारा आयोजित वार की 49वीं वार्षिक समूह बैठक में की गई। इस किस्म की हरे चारे की औसत पैदावार 407 क्विंटल प्रति हैक्टेयर है। सीएसवी 21 एफ और सीएसवी 30 एफ से क्रमशः 7.5 प्रतिशत व 5.8 प्रतिशत अधिक है। इस किस्म की सूखे चारे की औसत पैदावार115 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है।

इन्होंने किया विकसित

एचसी 713 किस्म को चारा अनुभाग के वैज्ञानिक डॉ. पम्मी कुमारी, डॉ. सत्यवान आर्य, डॉ. एसके पाहुजा, डॉ. एनके ठकराल एवं डॉ. डीएस फोगाट की टीम ने डॉ. सतपाल, डॉ. जयंती टोकस, डॉ. हरीश कुमार, डॉ. विनोद मलिक एवं डॉ. सरिता देवी के सहयोग से विकसित किया है।

ये किस्में की विकसीत

चारा अनुभाग 1970 से अब तक ज्वार की कुल आठ किस्में विकसित कर चुका है। इनमें से बहु कटाई वाली किस्म एसएसजी 59-3 को 1978 में विकसीत की है। दो कटाई वाली किस्म एचसी 136 को 1982 व एक कटाई वाली किस्में एचसी 308 को 1996, एचजे 513 को 2010 और एचजे 541 को 2014 में विकसीत की गई।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम ..... पंजाब केसरी .....

दिनांक 21.8.2019 पृष्ठ सं. 4 कॉलम 7-8

ह.कृ.वि. ने विकसित की ज्वार की नई किस्म

ज्वार की नई उन्नत किस्म।

हिसार, 20 अगस्त (ब्यूरो): चौ. चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय किसानों की आय को दोगुना करने के लिए लगातार प्रयासरत है। इसी कड़ी में विश्वविद्यालय के जैनेटिक्स एंड प्लांट ब्रीडिंग विभाग के चारा अनुभाग द्वारा ज्वार की एक उन्नत किस्म एच.सी. 713 को देश के दक्षिणी भाग में खेती के लिए चिन्हित किया गया है। ज्वार की यह किस्म दक्षिणी राज्यों मुख्यत: कर्नाटक, महाराष्ट्र और तमिलनाडु में चारे की अधिक व गुणवत्तापूर्ण चारे हेतू उपयुक्त है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. के.पी. सिंह ने बताया कि एच.सी. 713 की हरे चारे की पैदावार अति लोकप्रिय किस्म सी.एस.वी. 21 एफ से 7.5 प्रतिशत व सी.एस.वी. 30 एफ से 5.8 प्रतिशत अधिक होने के कारण किसानों को अधिक मुनाफा होगा, तथा पशुपालक किसानों को अधिक प्रोटीन व पाचनशीलता के कारण दुग्ध उत्पादन में वृद्धि से अधिक आर्थिक लाभ भी प्राप्त होगा। इस किस्म की एक विशेषता यह भी है कि इसमें मिठास 10 प्रतिशत से भी अधिक है जिसके कारण पशु इसको अधिक पसंद करते है। अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत ने बताया कि चारा अनुभाग 1970 से अब तक ज्वार की कुल 8 किस्में विकसित कर चुका है। इनमें से बहु कटाई वाली किस्म एस.एस.जी. 59-3 (1978), दो कटाई वाली किस्म एच.सी. 136 (1982) व एक कटाई वाली किस्में एच.सी. 308 (1996), एच.जे. 513 (2010) और एच.जे. 541 (2014) शामिल है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम ..... सिटी पल्स .....
दिनांक 20.8.2017 पृष्ठ सं. ..... 3 ..... कॉलम ..... 1-4 .....

किसानों की आय बढ़ाने में हकृवि ने विकसित की ज्वार की नई किस्म

चारा अनुभाग 1970 से अब तक ज्वार की कुल आठ किस्में विकसित कर चुका

सिटी पल्स न्यूज, हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय किसानों की आय को दोगुना करने के लिए लगातार प्रयासरत है। इसी कड़ी में विश्वविद्यालय के जैनेटिक्स एंड प्लांट ब्रीडिंग विभाग के चारा अनुभाग द्वारा ज्वार की एक उन्नत किस्म एच.सी. 713 को देश के दक्षिणी भाग में खेती के लिए चिन्हित किया गया है। ज्वार की यह किस्म दक्षिणी राज्यों मुख्यतः कर्नाटक, महाराष्ट्र और तमिलनाडु में चारे की अधिक व गुणवत्तापूर्ण चारे के लिए उपयुक्त है।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. के.पी. सिंह ने बताया कि एच.सी. 713 की हरे चारे की पैदावार अति लोकप्रिय किस्म सी.एस.वी. 21 एफ से 7.5 प्रतिशत व सी.एस.वी. 30 एफ से 5.8 प्रतिशत अधिक होने के कारण किसानों को अधिक मुनाफा

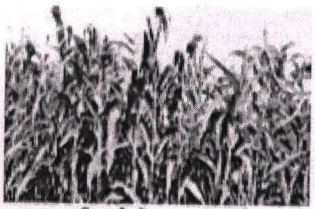

ज्वार की नई किस्म एच.सी. 713

होगा, तथा पशुपालक किसानों को अधिक प्रोटीन व पाचनशीलता के कारण दुग्ध उत्पादन में वृद्धि से अधिक आर्थिक लाभ भी प्राप्त होगा। इस किस्म की एक विशेषता यह भी है कि इसमें मिठास 10 प्रतिशत से भी अधिक है जिसके कारण पशु इसको अधिक पसंद करते है।

अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत ने बताया कि भारत के मुख्य ज्वार उत्पादक राज्य जैसे कि महाराष्ट्र, कर्नाटक एवं तमिलनाडु में क्रमशः करीब 28 लाख, 11 लाख व 3.5 लाख हैक्टेयर क्षेत्र में ज्वार की खेती की जाती है। इस किस्म की पहचान आईसीएआर के भारतीय कन्दन अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद व चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित ज्वार की 49वीं वार्षिक समूह बैठक में की गई। एच सी 713 किस्म को चारा अनुभाग के वैज्ञानिक डॉ. पम्मी कुमारी, डॉ. सत्यवान आर्य, डॉ. एस.के. पाहुजा, डॉ. एन.के. ठकराल एवं डॉ. डी.एस. फोगाट की टीम ने डॉ. सतपाल, डॉ. जयंती टोकस, डॉ. हरीश कुमार, डॉ. विनोद मलिक एवं डॉ. सरिता देवी के सहयोग से विकसित किया है। चारा अनुभाग 1970 से अब तक ज्वार की कुल आठ किस्में विकसित कर चुका है। इनमें से बहु कटाई वाली किस्म एस.एस.जी. 59-3 (1978), दो कटाई वाली किस्म एच.सी. 136 (1982) व एक कटाई वाली किस्में एच.सी. 308 (1996), एच.जे. 513 (2010) और एच.जे. 541 (2014) किसानों द्वारा अधिक पसंद की गई।

हरे चारे की औसत पैदावार 407 क्विंटल प्रति हेक्टेयर

इस किस्म की हरे चारे की औसत पैदावार 407 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है। जोकि ज्वार की अन्य बेहतर किस्मों सीएसवी 21 एफ और सीएसवी 30 एफ से क्रमशः 7.5 प्रतिशत व 5.8 प्रतिशत अधिक है। इस किस्म की सूखे चारे की औसत पैदावार 115 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है जोकि पूर्व में विकसित उन्नत किस्मों से अधिक है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम ....दैनिक हिसार........

दिनांक 20.8.2019 पृष्ठ सं. ...2... कॉलम ...7-8...

किसानों की आय बढ़ाने में हकृवि ने बढ़ाया एक ओर कदम-विकसित की ज्वार की नई किस्म

हिसारः 20 अगस्त : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय किसानों की आय को दोगुना करने के लिए लगातार प्रयासरत है। इसी कड़ी में विश्वविद्यालय के जैनेटिक्स एंड प्लांट ब्रीडिंग विभाग के चारा अनुभाग द्वारा ज्वार की एक उन्नत किस्म एच.सी. 713 को देश के दक्षिणी भाग में खेती के लिए चिन्हित किया गया है। ज्वार की यह किस्म दक्षिणी राज्यों मुख्यतः कर्नाटक, महाराष्ट्र और तमिलनाडु में चारे की अधिक व गुणवत्तापूर्ण चारे हेतू उपयुक्त है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. के.पी. सिंह ने बताया कि एच.सी. 713 की हरे चारे की पैदावार अति लोकप्रिय किस्म सी.एस.वी. 21 एफ से 7.5 प्रतिशत व सी.एस.वी. 30 एफ से 5.8 प्रतिशत अधिक होने के कारण किसानों को अधिक मुनाफा होगा, तथा पशुपालक किसानों को अधिक प्रोटीन व पाचनशीलता के कारण दुग्ध उत्पादन में वृद्धि से अधिक आर्थिक लाभ भी प्राप्त होगा। इस किस्म की एक विशेषता यह भी है कि इसमें मिठास 10 प्रतिशत से भी अधिक है जिसके कारण पशु इसको अधिक पसंद करते है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम ....भिलप शान्ति टाइम्स........
दिनांक 20.8.2019 पृष्ठ सं. ....8.... कॉलम ....1-3....

हकृवि ने विकसित की ज्वार की नई किस्म

किसानों की आय बढ़ाने में हकृवि ने बढ़ाया एक ओर कदम

हिसार, 20 अगस्त (निस)। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय किसानों की आय को दोगुना करने के लिए लगातार प्रयासरत है। इसी कड़ी में विश्वविद्यालय के जैनेटिक्स एंड प्लांट ब्रीडिंग विभाग के चारा अनुभाग द्वारा ज्वार की एक उन्नत किस्म एच.सी. 713 को देश के दक्षिणी भाग में खेती के लिए चिन्हित किया गया है। ज्वार की यह किस्म दक्षिणी राज्यों मुख्यतः कर्नाटक, महाराष्ट्र और तमिलनाडु में चारे की अधिक व गुणवत्तापूर्ण चारे के लिए उपयुक्त है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. केपी सिंह ने बताया कि एच.सी. 713 की हरे चारे की पैदावार अति लोकप्रिय किस्म सी.एस.वी. 21 एफ से 7.5 प्रतिशत व सी.एस.वी. 30 एफ से 5.8 प्रतिशत अधिक होने के कारण किसानों को अधिक मुनाफा होगा, तथा पशुपालक किसानों को अधिक प्रोटीन व पाचनशीलता के कारण दुग्ध उत्पादन में वृद्धि से अधिक आर्थिक लाभ भी प्राप्त होगा। इस किस्म की एक विशेषता यह भी है कि इसमें मिठास 10 प्रतिशत से भी अधिक है जिसके कारण पशु इसको अधिक पसंद करते है। प्रो. सिंह ने कहा कि यह एक मीठी व स्वादिष्ट किस्म है जोकि सिफारिश किए गए खाद व सिंचाई प्रबंधन में

अधिक पैदावार देने में सक्षम होने के साथ-साथ लवणीय भूमि में भी उगाने के लिए उपयुक्त है। इसके अलावा यह लोजिंग के प्रति प्रतिरोधी है, अधिक बारिश व तेज हवा चलने पर भी यह किस्म गिरती नहीं है। उल्लेखनीय है कि ज्वार में प्राकृतिक तौर पर पाया जाने वाला विषैला तत्व धूरिन इस किस्म में बहुत ही कम है (80 पी.पी.एम. ताजा भार आधार पर)। इसके अलावा इसमें प्रोटीन 7.5 प्रतिशत व पाचनशीलता 52.2 प्रतिशत है जिससे दुधारू पशुओं की उत्पादकता बढ़ेगी। एच सी 713 किस्म तनाछेदक कीट के प्रति प्रतिरोधी है व इस किस्म में पत्तों पर लगने वाले रोग भी नहीं लगते। चारा उत्पादन, पौष्टिकता एवं रोग प्रतिरोधकता की दृष्टि से यह एक उत्तम किस्म है। अनुसंधान निदेशक डॉ. एसके सहरावत ने बताया कि भारत के मुख्य ज्वार उत्पादक राज्य जैसे कि महाराष्ट्र, कर्नाटक एवं तमिलनाडू में क्रमशः करीब 28 लाख, 11 लाख व 3.5 लाख हैक्टेयर क्षेत्र में ज्वार की खेती की जाती है। इस किस्म की पहचान आईसीएआर के भारतीय कन्दन अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद व हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित ज्वार की 49वीं वार्षिक समूह बैठक में की गई। इस किस्म की हरे चारे की औसत पैदावार 407 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है। जोकि ज्वार की अन्य बेहतर किस्मों सीएसवी 21 एफ और सीएसवी 30 एफ से क्रमशः 7.5 प्रतिशत व 5.8 प्रतिशत अधिक है। इस किस्म की सूखे चारे की औसत पैदावार 115 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है जोकि पूर्व में विकसित उन्नत किस्मों से अधिक है।

एचसी-713 किस्म को चारा अनुभाग के वैज्ञानिक डॉ. पम्मी कुमारी, डॉ. सत्यवान आर्य, डॉ. एसके पाहुजा, डॉ. एनके ठकराल एवं डॉ. डीएस फोगाट की टीम ने डॉ. सतपाल, डॉ. जयंती टोकस, डॉ. हरीश कुमार, डॉ. विनोद मलिक एवं डॉ. सरिता देवी के सहयोग से विकसित किया है।

चारा अनुभाग 1970 से अब तक ज्वार की कुल आठ किस्में विकसित कर चुका है। इनमें से बहु कटाई वाली किस्म एस.एस.जी. 59-3 (1978), दो कटाई वाली किस्म एच.सी. 136 (1982) व एक कटाई वाली किस्में एच.सी. 308 (1996), एच.जे. 513 (2010) और एच.जे. 541 (2014) किसानों द्वारा अधिक पसंद की गई।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम दैनिक भास्कर

दिनांक 21.8.2019 पृष्ठ सं. 3 कॉलम 1-4

एचएयू में आईसीएआर-जेआरएफ परीक्षा की ट्रेनिंग

हिसार | चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के छात्र कल्याण निदेशालय में आईसीएआर-जेआरएफ परीक्षा-2019 की ट्रेनिंग शुरू हो चुकी है। यह ट्रेनिंग 19 अगस्त से 29 अगस्त तक चलेगी। इस ट्रेनिंग में 65 विद्यार्थी हिस्सा ले रहे हैं। इस अवसर पर डॉ. केएस बागंरवा ने विद्यार्थियों से कोचिंग का लाभ उठाने पर जोर दिया, ताकि विद्यार्थी अपने लक्ष्य को पा सकें। उन्होंने कहा कि विद्यार्थियों को प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए तैयार करने में यहां के प्राध्यापक उनकी पूरी सहायता करेंगे। डॉ. आरके ननवाल ने विद्यार्थियों को जेआरएफ के महत्व को बताया। इस प्रशिक्षण का संयोजन डॉ. रामधन कर रहे हैं।

एचएयू में नेट जेआरएफ परीक्षा की ट्रेनिंग में उपस्थित विद्यार्थी एवं अधिकारीगण।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम ..... अमर उजाला .....

दिनांक 21.8.2019 पृष्ठ सं. 6 कॉलम 1-2

न्यूज डायरी

आईसीएआर जेआरएफ की ट्रेनिंग शुरू

हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (हकृवि) के छात्र कल्याण निदेशालय में आईसीएआर-जेआरएफ परीक्षा-2019 की ट्रेनिंग शुरू हो चुकी है। यह ट्रेनिंग 19 अगस्त से 29 अगस्त तक चलेगी। इस ट्रेनिंग में 65 विद्यार्थी भाग ले रहे हैं। इस अवसर पर डॉ. केएस बागंरवा ने विद्यार्थियों से कोचिंग का लाभ उठाने पर जोर दिया ताकि विद्यार्थी अपने लक्ष्य को प्राप्त सकें। उन्होंने कहा विद्यार्थियों को प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए तैयार करने में यहां के प्राध्यापक उनकी पूरी सहायता करेंगे डॉ. आरके ननवाल ने विद्यार्थियों को जेआरएफ के महत्व को विस्तार से बताया। सहनिदेशक डॉ. ओमेंद्र सांगवान ने प्रतिभागियों को प्लेसमेंट के बारे में विस्तार से बताया। इस प्रशिक्षण का संयोजन डॉ. रामधन कर रहे हैं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम ......दैनिक जागरण, हरि भूमि......

दिनांक 21.8.2019...... पृष्ठ सं. ...17, 14... कॉलम ...7-8, 1.........

हकृवि में आइसीएआर-जेआरएफ परीक्षा की ट्रेनिंग शुरू

ट्रेनिंग में उपस्थित विद्यार्थी एवं अधिकारीगण। • जागरण

हिसार : हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के छात्र कल्याण निदेशालय में आइसीएआर-जेआरएफ परीक्षा-2019 की ट्रेनिंग शुरू हो चुकी है। यह ट्रेनिंग 19 से 29 अगस्त तक चलेगी। इस ट्रेनिंग में 65 विद्यार्थी भाग ले रहे हैं। डा. केएस बांगरवा ने विद्यार्थियों से कोचिंग का लाभ उठाने पर जोर दिया ताकि विद्यार्थी अपने लक्ष्य को प्राप्त सकें। उन्होंने कहा विद्यार्थियों को प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए तैयार करने में यहां के प्राध्यापक उनकी पूरी सहायता करेंगे। डा. आरके ननवाल ने विद्यार्थियों को जेआरएफ के महत्व को विस्तार से बताया। सहनिदेशक डा. ओमेन्द्र सांगवान ने सभी प्रतिभागियों व अधिकारियों का स्वागत किया।

हकृवि में जेआरएफ की ट्रेनिंग आरंभ

हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के छात्र कल्याण निदेशालय में आईसीएआर-जेआरएफ परीक्षा-2019 की ट्रेनिंग शुरू हो चुकी है। यह ट्रेनिंग 19 अगस्त से 29 अगस्त तक चलेगी। इस ट्रेनिंग में 65 विद्यार्थी भाग ले रहे हैं। इस अवसर पर डॉ. केएस बांगरवा ने विद्यार्थियों से कोचिंग का लाभ उठाने पर जोर दिया ताकि विद्यार्थी अपने लक्ष्य को प्राप्त सकें। उन्होंने कहा विद्यार्थियों को प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए तैयार करने में यहा के प्राध्यापक उनकी पूरी सहायता करेंगे। डॉ. आरके ननवाल ने विद्यार्थियों को जेआरएफ के महत्व को विस्तार से बताया। सहनिदेशक डॉ. ओमेंद्र सांगवान ने सभी प्रतिभागियों व अधिकारियों का स्वागत किया व प्लेसमेंट के बारे में विस्तार से बताया।